आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक: -प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2484 • उदयपुर, गुरुवार 14 अक्टूबर, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

अबोहर (पंजाब) में दिव्यांग सहायता शिविर

नारायण सेवा संस्थान की शाखा अबोहर (पंजाब) के तत्वावधान में गत 12 सितम्बर 2021 को दिव्यांग जांच, ऑपरेशन चयन, कृत्रिम अंग माप एवं सहायक उपकरण वितरण शिविर आयोजित हुआ।

शिविर सहयोगकर्ता श्री बालाजी समाज सेवा संघ रहा। शिविर में 210 दिव्यांगों की ओपीडी, 39 का ऑपरेशन चयन, कैलिपर्स का माप एवम् कृत्रिम अंगों का नाप लिया गया।

शिविर के मुख्य अतिथि श्री मान राजेन्द्रपाल जी (समाजसेवी), अध्यक्ष श्री गंगन जी मल्हौत्रा, (चैयरमेन बालाजी समाज सेवा संघ), विशिष्ट अतिथि श्री अमित भाई पधारे।

शिविर में डॉ एस.एल गुप्ता जी ने सेवाएं दी। शिविर टीम में आश्रम की ओर से श्री मान् मुकेश जी शर्मा (शिविर प्रभारी), उपस्थित रहे।

खुर्जा (उत्तरप्रदेश) में कृत्रिम अंग वितरण शिविर

नारायण सेवा संस्थान आप सभी की शुभकामनाओं व सहयोग से विश्वभर में दिव्यांग सहायता व सेवा में लिये जानी जा रही है। देश–विदेश में समय–समय पर शिविर लगाकर कृत्रिम अंगों का वितरण, दिव्यांग सहायक उपकरण एवं दिव्यांग ऑपरेशन जारी है।

ऐसा ही कृत्रिम अंग वितरण शिविर 12 अगस्त 2021 को नारायण सेवा संस्थान के खुर्जा, जिला– बुलंदशहर, उत्तरप्रदेश आश्रम में संपन्न हुआ।

इस शिविर में 19 दिव्यांगों के लिये कृत्रिम अंग तथा 07 के लिये कैलिपर्स की सेवा सराहनीय हुई। उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री हरपाल सिंह जी (पूर्व विधायक खुर्जा), अध्यक्षता श्री सत्यवीर शास्त्री जी (पूर्व प्रधान महोदय, खुर्जा), विशिष्ट अतिथि श्रीमान जयप्रकाश जी चौहान, श्रीमान राजप्रताप सिंह जी (समाज सेवी), श्रीमान योगेन्द्र प्रताप जी राघव (सेवा प्रेरक एवं संयोजक) कृपा करके पधारे और संस्थान की सेवा प्रकल्पों की सराहना की।

टेक्नीशयन टीम में श्री नाथूसिंह जी, शिविर टीम में श्री हरिप्रसाद जी (शिविर प्रभारी), श्री भरत जी भट्ट का पूर्ण योगदान रहा।

खाजूवाला (बीकानेर) में दिव्यांग जांच ऑपरेशन चयन तथा कृत्रिम अंग माप शिविर

नारायण सेवा संस्थान द्वारा देश–विदेश में समय–समय पर शिविर लगाकर कृत्रिम अंगों का वितरण जारी है। ऐसा ही एक कृत्रिम अंग वितरण शिविर 26 सितम्बर 2021 को नारायण सेवा संस्थान के खाजूवाला, जिला बीकानेर आश्रम में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता विश्व हिन्दू परिषद् शाखा बीकानेर रही। शिविर में 218 दिव्यांग भाई–बहिनों की ओपीडी हुई, 37 का ऑपरेशन चयन, 20 दिव्यांगों के लिये कृत्रिम अंग तथा 25 के लिये कैलीपर्स की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् भोजराज जी लेखाना, अध्यक्ष श्री भागीरथ जी ज्याबी, विशिष्ट अतिथि श्रीचेतराम जी, श्रीरामधन जी विश्नोई, श्रीफूलदास स्वामी जी, श्रीराजाराम जी जाखड (संस्थान संयोजक), श्रीमती मधू जी शर्मा, श्रीराजकुमार जी ढ़ोलिया, श्रीश्यामलाल जी जांगिड, श्री अजय जी कृपा करके पधारे। शिविर में डॉ. एस.एल. गुप्ता जी, मुकेश जी शर्मा (शिविर प्रभारी) व भंवरसिंह जी ने सेवायें दीं।

हमीरपुर में कृत्रिम अंग सेवा

नारायण सेवा संस्थान की देश–विदेश में स्थित शाखायें भी दिव्यांगजनों को राहत प्रदान करने व सेवा करने में तत्पर हैं। गत 17–18 जुलाई 2021 को ज्वालाजी, जिला– कांगड़ा, (हि.प्र.) की हमीरपुर शाखा द्वारा मातृ सदन, सरस्वती विद्यालय के पास कृत्रिम अंग वितरण शिविर लगाया गया।

इस शिविर में कुल 68 दिव्यांगजन आये। जिनमें से 28 को कृत्रिम अंग प्रदान किये। तथा 40 को केलिपर्स वितरित किये गये।

शिविर में गरिमामय उपस्थिति श्रीमान् प्रेमकुमार जी धूमल– पूर्व मुख्यमंत्री हि.प्र. (मुख्य अतिथि), श्रीमान् रमेश जी घवाला– पूर्व मंत्री वरमानीया विद्यायक (अध्यक्ष), श्रीमान् रविन्द्र रवि जी– पूर्व मंत्री महोदय (विशिष्ट अतिथि), श्रीमान् रसील सिंह जी मनकोटिया– शाखा संयोजक हमीरपुर, श्रीमान् संजय जी जोशी– पत्रकार, श्रीमान पंकज जी शर्मा एवं श्री रामस्वरूप जी शास्त्री– समाजसेवी पधारे। टेक्निशियन टीम में श्री नरेश जी वैष्णव एवं श्री किशन जी लोहार ने सेवाएं दी। शिविर टीम श्री अखिलेश जी अग्निहोत्री– प्रभारी, श्री रमेश जी मेनारिया, श्री मुन्ना सिंह जी आदि ने सहयोग किया।

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें

मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999

आपके अपने संस्थान का पता

नारायण सेवा संस्थान - 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

नारायण सेवा से मिला नया जीवन

परिवार की आर्थिक स्थिति अत्यन्त खराब है। पिताजी मजदूरी करके किसी तरह सात सदस्य के परिवार का भरण–पोषण कर रहे हैं। दो साल की उम्र में तेज बुखार हुआ और पालियो हो गया, जिससे पांव सिकुड़ गया। इस तरह मेरा चलना–फिरना बाधित हो गया और जीवन पशु की तरह हो गया।

ज्यों–ज्यों समझ आने लगी मैं अपनी विकलांगता के कष्ट से दुःखी रहने लगा। एक दो जगह दिखाया भी, परन्तु परिवार में कोई भी शिक्षित नहीं है, अतः इलाज की जानकारी या इलाज करवाने का विचार ही नहीं आया। गांव में ही देशी इलाज करने वाले एक–दो चिकित्सकों को दिखाया पर कोई उपचार नहीं हुआ।

गांव के निकट मेरे एक रिश्तेदार श्री राधेश्याम जी ने मुझे संस्थान के बारे में बताया जिन्हें भी पोलियो था और संस्थान में ऑपरेशन के बाद वे पूरी तरह ठीक हो गये। उनकी राय के अनुसार मैं यहां आया और जांच के बाद डॉ. सा. ने कहा कि ऑपरेशन के बाद मैं ठीक हो जाऊंगा और आराम से चल–फिर सकूंगा। मैं यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ। जीवन के प्रति नई उम्मीद जगी। पांव का ऑपरेशन हुआ। अब मैं कैलिपर्स की सहायता से सामान्य व्यक्ति की तरह चल–फिर सकता हूँ। संस्थान ने मुझ जैसे असहाय को नया जीवन दिया है। मैं संस्थान के सभी भाई–बहनों के प्रति बहुत आभारी हूँ और भगवान से प्रार्थना करता हूं कि उनकी सेवा के बदले में भगवान उन्हें धन–वैभव और सुख–शान्ति दे।

प्रसन्नता प्रेम का झरना : कैलाश मानव

मुझे तो मेरा पड़ोसी नहीं मिलता।
भीड़ तो मिलती है इन्सान नहीं मिलता।।

अपन इंसानयत के लिए पैदा हुए हैं। तो कल का मतलब तीन दिवस और परसों का मतलब आज। पूरा जीवन 100 साल की उम्र जब होयगी जो गोरमेन्ट सर्विस में रहे हैं। राज्य सरकारों या केंन्द्र सरकारों में या सार्वजनिक में जहाँ पेंशन प्राप्त होती वहा डबल हो जाती है पेंशन। सौ साल के होना जीवेत शरदम् । ये ऋग्वेद कहते हैं। जो ऋग्वेद कहतें है कि ऋग्वेद दिव्य ऋचाओं ओं की वो माला है जो जीवन जीने की कला बताते हैं। वो ऋग्वेद है, वो यर्जुवेद है, वो अर्थवेद है, वो सामवेद है। वो हमारे कठोपनिषद् हैं। जिसमे जाबालि ऋषि जो अपनी तपस्या एक पैर पर खड़ा रहा। महाराज 12 साल और कपड़े लटकाता हवा में लटक जाते । ये सिद्धि प्राप्त कर ली। पर क्रोध कितना। कबूतर को देखा बीट कर दिया मेरे माथे अब भस्म हो जा शाप दे दिया। उधर शाप दिया और उधर कपड़े नीचे धड़ाम से आकर के गिर पड़े कि उसकी सिद्धि नष्ट हो गई। कौनसी सिद्धि ना– ना।

नदी में पैरों पर जा रहे हैं और गुरुजी को बड़ा घमंण्ड बता रहे हैं और गुरुजी ने कहा नाव वाला कितने रुपया लेता था? दस रुपये गुरुजी। बस। दस रुपया बचाने के लिए तूने जीवन लगा दिया रे। कहीं – कहीं तो हमने पढ़ा ऐसे गुरुजी भी थे कि चबूतरे पर बैठे थे। उन्होंने देखा कि मेरा शिष्य घमण्ड प्रदर्शित करने के लिए बिना नाव मतलब नदी में चलकर के आ रहा है तो उन्होंने पहाड़ को कहा चल पहाड़ चल अब पहाड़ चलकर के इधर आ रहा है। और वो नदी में पैरों से चलकर के जा रहा है तो गुरुजी के चरणों में गिर पड़ा। क्या सिद्धियां प्राप्त करनी है? जाबालि ऋषि को कहा था। जो कम नही तौलता, जो मिलावट नहीं करता, जो ग्राहक को भगवान समझता है उससे ज्ञान प्राप्त कर लूं। जो सुगृहिणी नारी घर को सुन्दर रखती है, बच्चों को संस्कारित करती है, पतिदेव को अच्छी सलाह देती है।

सम्पादकीय

इन दिनों पारिवारिक रिश्ते कुछ ज्यादा ही दरकने लगे हैं। भारत में विवाह–विच्छेद की दर बढ़ती जा रही है। पीढ़ी अंतराल के कारण पिता–पुत्र में पटरी बैठ नहीं पा रही है। अन्य रिश्तों की तो औकात ही क्या है? जब अंतरंग और प्रगाढ़ रिश्तों में भी निरंतर दरारें आने लगे तो हमें रुक कर सोचना चाहिए कि गलत क्या और क्यों हो रहा है।

इनके कारण तो अनेक हो सकते हैं, हरेक मामले की अपनी प्रकृति होती है पर मोटे तौर पर जो लगता है वह है पति–पत्नी में एक दूसरे को समझने का धैर्य खोता जा रहा है। त्वरित निर्णय की प्रकृति हावी होने के कारण बिना गहन विचार किये पति, पत्नी पर और पत्नी पति पर अपने मत को आरोपित करके उन्हें अपने अनुसार सोचने, चलने व व्यवहार करने के सांचे में ढालना चाहते हैं। पर स्वाभाविक है कि हर व्यक्ति का आत्मसम्मान होता है, वह आहत हो तो उत्तेजना होना भी स्वाभाविक है। ऐसे ही पिता–पुत्र में भी है, वे अपने को ही समझदारी का पुरोधा मानकर दूसरे को नासमझ मानते हैं। ये दोनों रिश्ते एक बारीक सी त्रुटि से ही कमजोर होते जा रहे हैं। एक दूसरे को समझने व समझाने का दौर जब–जब मंदा होता है तब–तब ऐसे संकट आते हैं। इन्हें परस्पर संवाद व समझ से ही हल किया जा सकता है।

कुछ काव्यमय

जो भी मेरे हाथ है,
नहीं चलेगा साथ।
फिर भी मैं माना नहीं,
क्षमा करो हे नाथ।।
क्या लेकर कोई गया,
मिलते नहीं प्रमाण।
मन मेरा माना नहीं,
सुनता रहा बखाण।।
ना तो कुछ लाया यहाँ,
ना पाऊँ ले जाय।
फिर किसकी चिन्ता करूं,
किसकी हाय बराय।।
जो जाना था साथ में,
उस पे दिया न ध्यान।
व्यर्थ किया जीवन सकल,
बना रहा नादान।।
अब भी अवसर शेष है,
हे मेरे करतार।
माफ करो सब गलतियां,
देओ मुझे सुधार।।

- वरदीचन्द राव

अपनों से अपनी बात

सेवा धर्म

एक गृहस्थ गरीबी के कारण पारिवारिक क्लेश से परेशान....एक दिन चुपचाप वह परिवार छोड़कर सुख–शान्ति की तलाश में जंगल की ओर निकल गया। सूर्यास्त होने पर रात्रि विश्राम के लिए एक सुनसान झोंपड़े की ओर बढ़ा...।

झोंपड़े में एक साधु को ध्यानस्थ बैठा देखकर बाहर ही सो गया। प्रातः उठकर देखा.....साधु तब भी उसी प्रकार ध्यानस्थ थे। मन में आया...साधु के यहाँ रात्रि विश्राम पाया है.....बदले में कुछ सेवा कर लूँ.....तब आगे बढूँ। उसने झोंपड़ी के चारों ओर बिखरे सूखे फूल–पत्ते आदि साफ किये और चलने को हुआ.....।

तभी कुछ लोग वहाँ आये। पूछने पर उन्होंने बताया.....ये साधु यहाँ कई दिनों से इसी तरह ध्यानस्थ हैं। कभी–कभार 4–6 दिन में कुछ समय के लिए ध्यान करने आया करते हैं। ये लोग प्रतिदिन कुछ खाद्य सामग्री यहाँ रख देते हैं....। साधु महात्मा का जब मन होता है, ग्रहण कर लेते है....यह कहते हुए उन लोगों ने इस गृहस्थ से भी भोजन करने

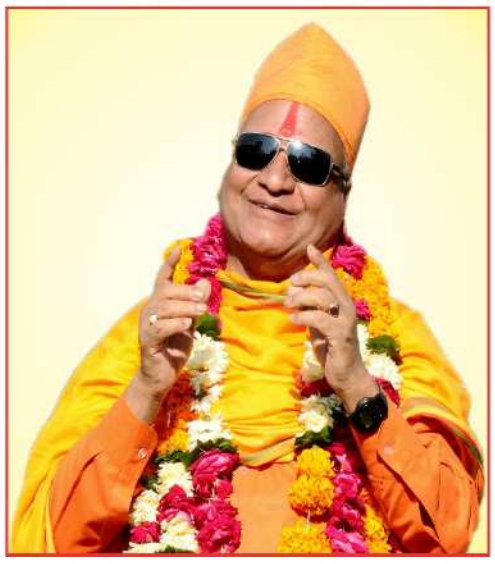

का आग्रह किया जिसे उसने स्वीकार कर लिया। उस ने सोचा इन महात्मा का आशीर्वाद लेकर ही आगे बढ़ना चाहिये। वह वहींरुक गया, क्योंकि महात्मा कब ध्यान का त्याग करेंगे पता नहीं।

कई दिन बीत गये। वह प्रतिदिन आस–पास सफाई करता, पेड़–पौधों में पानी देता और गाँव वालों द्वारा लाया जाने वाला प्रसाद ग्रहण करता। इस प्रकार वह झोंपड़ी और परिवेश एक सुन्दर आश्रम का रूप लेने लगे।

एक दिन जब वह सो कर उठा तो देखा साधु महात्मा ध्यान से उठ चुके थे। आश्रम के आस–पास घूम रहे थे। अनेक पशु–पक्षी उन महात्मा के साथ–साथ इधर–उधर हो रहे थे। यह सब देख वह गृहस्थ विस्मित था।

तभी महात्मा ने उसे पूछा कि वह कौन है? कहाँ से आया है। यहाँ सफाई किसने की है? आदि। उस गृहस्थ ने अपनी व्यथा सुना दी। साधु महात्मा ने करुणापूर्वक सन्निकट पुष्प–गुच्छ से एक पंखुड़ी तोड़ कर उस गृहस्था को दी और कहा मै तुम्हारी सेवा से प्रसन्न हूँ। अपने घर जा.....असहाय पीड़ितों की सेवा कर... इस पंखुड़ी के दर्शन कर.....यह तुम्हें सेवा प्रेरणा देगी और तुम्हारे परिवार में सुख–शान्ति–समृद्धि आयेगी।

गृहस्थ घर लौटा। उन सिद्ध महात्मा के वचनानुरूप सेवा धर्म अपनाया। उसके घर में सुख–समृद्धि का वास हुआ।

यह प्रसंग एक संकेत मात्र है। सेवा का प्रतिफल अकल्पनीय होता है। भौतिक–मानसिक–सामाजिक–पारिवारिक–वैयक्तिक संताप, पीड़ा से मुक्ति का एक मात्र प्रभावी उपाय 'सेवा' है। देरी न करें। असहाय–दिव्यांग की सेवा का व्रत लें। शुभ होगा।

–कैलाश 'मानव'

कर्त्तव्यपालन

हॉलीवुड की मशहूर अभिनेत्री एना बेहद खूबसूरत और अपने समय की सबसे लोकप्रिय अदाकारा थी। उसके जीवनकाल में एक समय ऐसा भी आया, जब उसकी शादी हुई और एक पुत्र–रत्न की प्राप्ति हुई। वह अपने परिवार के साथ अत्यन्त प्रसन्न थी। कुछ समय पश्चात् उसके पति की मृत्यु हो गई। अब एना का सारा समय अपने पुत्र की देखभाल में ही बीतता। वह अपने पुत्र का लालन–पालन अत्यन्त लाड़–प्यार से करती। वह अपने पुत्र के मोह में इतनी आसक्त थी कि पुत्र के थोड़े से भी कष्ट पर वह बहुत बेचैन हो उठती।

एक दिन एक बीमारी से उसके पुत्र की अचानक मृत्यु हो गई। पुत्र की मृत्यु के शोक में एना ऐसी डूबी कि मानसिक अवसाद का शिकार हो गई। उसे कुछ भी अच्छा नहीं लगता। वह अपने पुत्र के ही विचारों में खोई रहती, फिल्मों में

काम करना बंद कर दिया। धीरे–धीरे उसके शरीर की कांति जाती रही। अब उसे फिल्मों में काम मिलना बंद हो गया और उसकी आर्थिक स्थिति भी दिनों–दिन कमजोर हो गई।

उसकी यह हालत उसकी एक सहेली से देखी नहीं गई। वह एना को एक फकीर बाबा के पास ले गयी। उसने फकीर को एना के बारे में सब बताया और फकीर बाबा से विनती की कि एना को ठीक कर दें। फकीर बाबा ने सारा वृतान्त सुना, एना की स्थिति देखी, खड़े हुए और एना का हाथ पकड़ कर उसे एक अनाथालय में ले गए। वहाँ उन्होंने एक अनाथ बच्चे का हाथ एना के हाथ में रखा और बोले–इस बच्चे को अपना पुत्र ही समझो और इसका लालन–पालन बिल्कुल वैसे ही करो, जैसे तुम अपने बच्चे का करती थी। मोह–आसक्ति से दूर रहकर, अपेक्षाओं से रहित होकर और इस बच्चे के प्रति केवल माँ का कर्त्तव्यपालन करना और कुछ मत करना।

एना ने फकीर बाबा की सलाह का पूर्ण रूप से पालन किया और वह धीरे–धीरे ठीक हो गई। मोह–आसक्ति से दूर रहकर केवल कर्त्तव्यपालन की दृष्टि से ही प्रत्येक रिश्ते को निभाना, यही सुख का मार्ग है।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

गांव पहुँचे तो इस बार लोगों की भीड़ पिछली बार से दुगुनी हो गई थी। पौष्टिक आहार व वस्त्रों के वितरण की बात आग की तरह फैल गई थी। लोग दूर–दूर से चलकर यहां एकत्र आये थे। कलक्टर भी सपत्नी पहुँच गये तो कैलाश को प्रसन्नता हो गई, उसने मन ही मन महन्त को धन्यवाद दिया।

कैलाश हाथा जोड़ कर, उनके चरणों में नतमस्तक होने लगा तो उन्होंने उसे थाम कर गले लगा लिया और जेब में जितने रुपये थे सब उसे देते हुए कहा कि –सेवा में काम ले लेना। लगभग ढाई हजार रु. थे। इस बार उदयपुर से ही छाछ बनाने के लिये एल्यूमीनियम का बड़ा सा मटका और बिलौनी ले आये थे। दूध के पाउडर को गर्म कर उसका दही जमाने को रखने के लिये पहले ही कह दिया था।

समूचा कार्य इस बार पूर्व की अपेक्षा ज्यादा व्यवस्थित तरीके से हो रहा था। कलेक्टर बहुत प्रभावित हो रहे थे, बार–बार प्रशंसा कर रहे थे। उन्होंने कैलाश से पूछा कि आपका कार्यालय कहां है? कैलाश हँस पड़ा और बोला कार्यालय तो है ही नहीं, से.5 में एक छोटा सा क्वार्टर किराये पर ले रखा है जिसमें वह रहता है और वहां से सारा कार्य होता है।

कलेक्टर आश्चर्यचकित हो गये, बोले इतना भारी कार्य कर रहे हो और कार्यालय तक नहीं? सरकार से जमीन मांग कर कार्यालय क्यूं नहीं बनाया? कैलाश ने कहा–हमारी तो कोई सिफारिश भी नहीं, सेवाभावी लोगों से ही मांग–तांग कर सारा कार्य करते हैं। इस पर कलेक्टर ने कहा–यह 6 फीट का आदमी आपके सामने खड़ा है, यह है ना आपकी सिफारिश, मैं यू.आई.टी. का भी चेयरमैन हूं, अभी मुझे आवेदन पत्र दो। जब कलेक्टर स्वयं आगे होकर इतनी बात कह रहे हैं तो कैलाश ने तुरन्त वहीं एक कागज लेकर जमीन हेतु आवेदन लिख दिया। कलेक्टर ने आवेदन देख कर कहा कि इस पर रजिस्ट्रेशन नं. लिखो, कैलाश ने कहा कि रजिस्ट्रेशन ही नहीं है तो नम्बर कहां से आयगा? कलेक्टर फिर अचरज में पड़ गये, बोले – क्यूं नहीं करवाया? उसके पास कोई जवाब नहीं था, बोला कभी जरूरत ही महसूस नहीं हुई।

अंश - 136

अदरक-तुलसी का रस देगा खांसी में आराम

अदरक को मसाले के अलावा दवा के रूप में भी उपयोग किया जाता है। दो चम्मच अदरक के रस को शहद में मिलाकर रोज सुबह खाली पेट लेने से खून साफ होता है। वहीं यदि खांसी अधिक है तो अदरक के छोटे टुकड़े को तुलसी की कुछ पत्तियों के साथ कूटे। इसे छानकर रस को पीने से कुछ ही दिन में आराम मिल जाता है।

अनुलोम-विलोम

सांस की गति सही रहेगी तो सूक्ष्म तकलीफों में राहत मिलेगी। इसमें अनुलोम – विलोम से राहत मिलती है। सुखासन में बैठकर दाएं हाथ के अंगूठे से दाई नासिका बंद करें और बाईं नासिका से सांस अंदर लें। अब अनामिका अंगुली से बाई नासिका बदं करें। फिर दाई नासिका को खोलकर सांस छोड़ें। ध्यान रखें कि दूसरी बार में जिस नासिका से सांस छोड़ रहे हैं उसी से दोबारा सांस को अंदर लेकर दूसरी नासिका से सांस छोड़ें।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

बहुत पुराना परिचय था, बहुत प्रेम रखते थे।उन्होंने कहा था—सीधे मेरे पास आ जाना— जयपुर में।आये, उनके पीछे दो बड़े—बड़े कमरे खाली पड़े थे। बहुत बड़ा क्वार्टर, पोस्टमास्टर साहब ने कहा— मेरे तो एक कमरा काफी है। मैं तो अकेला रहता हूँ— कैलाशजी। आपकी माताजी तो हरिराम जी लश्करी साहब की धर्मपत्नी, माताजी तो पाली में ही है। तो ये दो कमरे खुले पड़े हैं। आप सोओ, बैठो आराम से। भोजन होटल में करेंगे। गये पीएनबी ऑफिस में जा के, डिपार्टमेंट में जाकर नमस्कार किया। साहब यह लीजिये कागज, हम आ गये हैं, सरदारशहर से। आइये, आइये इंस्पेक्टर साहब बैठिये। साहब, क्या परीक्षा के लिये, रोज कैसे, कितनी बजे आना? कितने बजे आना पड़ेगा? अरे कैलाश जी, ये तो गर्वनमेंट ने कर रखा है, ये तो एक फार्मोलिटी है, वोल्यूम नम्बर नाईन। हाँ, पतला सा वॉल्यूम है। आपके पास ये, उसी में से पूछेंगे परीक्षा फार्मोलिटी है। डोन्ट वरी, आप तो एक दिन आ जाओ, अमुक तारीख को। दो अप्रेल को आ जाओ परीक्षा ले लेंगे। आपको प्रमाण पत्र दे देंगे। राधकृष्ण सोनी जी, आर. के. सोनीजी मिले। कैलाशजी, कैलाशजी जूनीयर एकाउन्ट्स ऑफिसर पार्ट सैकण्ड करना है। पार्ट वन तो क्लियर कर चुके है— आप। मैं भी पार्ट वन क्लियर कर चुका हूँ। अरे! सोनी साहब मैं तो आईपीओ भी हूँ। पार्ट वन क्लियर किया तो अच्छी बात हैं, पर जूनीयर एकाउन्ट्स ऑफिसर के बाद दो—तीन साल बाद देखेंगे। मैंने कहा— मैं तो दो—तीन साल बाद पार्ट सैकण्ड करूंगा। दो—तीन साल आईपीओ रहना चाहता हूँ। बड़ा आनन्द आ रहा है। ऊँट पे बैठकर जाणा, ऊँटगाड़ी में बैठकर जाना, बीकानेर जाना। हाँ, तुलसीदास तुलसीदास चौराहा, तुलसी भवन डॉक्टर आर. के. अग्रवाल साहब का बनाया हुआ। सुना है आर.के. अग्रवाल साहब, सौलह साल सर्जन रहे। वहाँ एक समिति बनाई। एक ऑफिसर से दोस्ती हुई। तुलसी चौराहा बन गया, तुलसी भवन बन गया। सत्संग होने लगता है।

सेवा ईश्वरीय उपहार— 262 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

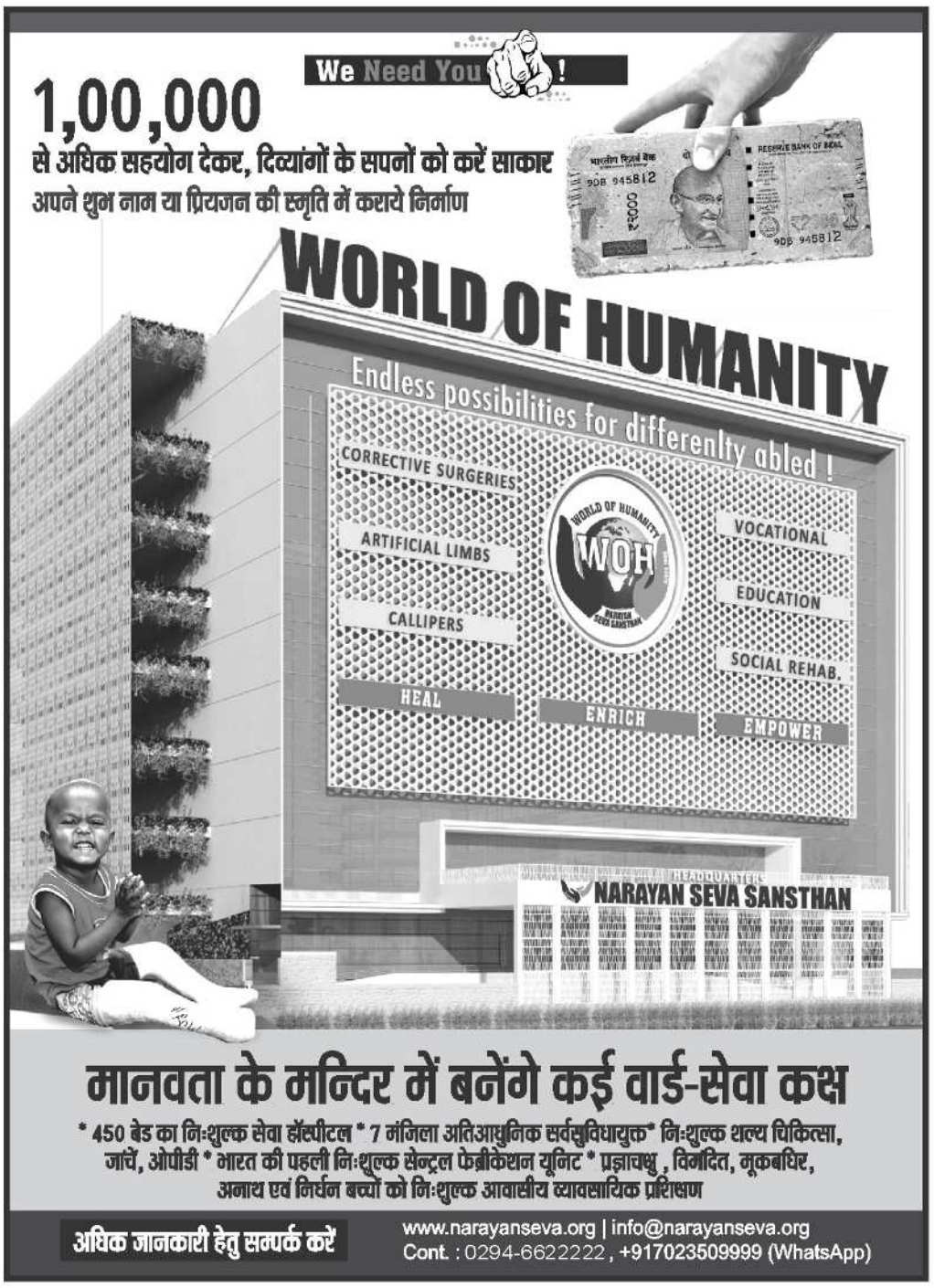

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023